

सलोकु ॥

पूरा प्रभु आराधिआ  
पूरा जा का नाउ ॥  
नानक पूरा पाइआ  
पूरे के गुन गाउ ॥१॥

असटपदी ॥

पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥  
पारब्रह्मु निकटि करि पेखु ॥  
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥  
मन अंतर की उतरै चिंद ॥  
आस अनित तिआगहु तरंग ॥  
संत जना की धूरि मन मंग ॥  
आपु छोडि बेनती करहु ॥  
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥  
हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥  
नानक गुर पूरे नमसकार  
॥१॥

खेम कुसल सहज आनंद ॥  
साधसंगि भजु परमानंद ॥  
नरक निवारि उधारहु जीउ ॥  
गुन गोबिंद अंम्रित रसु पीउ ॥  
चिति चितवहु नाराइण एक ॥  
एक रूप जा के रंग अनेक ॥  
गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥  
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥  
सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥  
नानक जीअ का इहै अधार  
॥२॥

उतम सलोक साध के बचन ॥  
अमुलीक लाल एहि रतन ॥  
सुनत कमावत होत उधार ॥  
आपि तरै लोकह निसतार ॥  
सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥  
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥  
जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥  
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥  
प्रगटे गुपाल महांत कै माथे ॥  
नानक उधरे तिन कै साथे

॥३॥

सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥  
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥  
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥  
अंम्रित नामु साधसंगि लैन ॥  
सुप्रसन्न भए गुरदेव ॥  
पूरन होई सेवक की सेव ॥  
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥  
राम नाम सुनि रसना कहते ॥  
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥  
नानक निबही खेप हमारी

॥४॥

प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥

सावधान एकागर चीत ॥

सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥

जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥

सरब इछा ता की पूरन होइ ॥

प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥

सभ ते ऊच पाए असथानु ॥

बहुरि न होवै आवन जानु ॥

हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥

नानक जिसहि परापति होइ

॥५॥

खेम सांति रिधि नव निधि ॥  
बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥  
बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥  
गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥  
चारि पदारथ कमल प्रगास ॥  
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥  
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥  
समदरसी एक द्रिसटेता ॥  
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥  
गुर नानक नाम बचन मनि सुने  
॥६॥

इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥  
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥  
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥  
सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥  
सगल मतांत केवल हरि नाम ॥  
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥  
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥  
संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥  
जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥  
साध सरणि नानक ते आए

॥७॥



जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥  
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥  
जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥  
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥  
निरमल सोभा अंम्रित ता की बानी ॥  
एकु नामु मन माहि समानी ॥  
दूख रोग बिनसे भै भरम ॥  
साध नाम निरमल ता के करम ॥  
सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥  
नानक इह गुणि नामु सुखमनी  
॥८॥२४॥